-:: दोहा ::-

पूर्व पुण्य से हो रहा, नव देवों का दर्श।
अल्प बुद्धि कैसे लहे, अनंत गुण का स्पर्श।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-::घत्ता::-

प्रभुवर को पूजे, शिवपथ सूझे, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।

आचार्य गुरुवर विद्यासागरजी महाराज
द्वारा रचित

जो श्रेष्ठ हैं शरण मंगल कर्मजेता,
आराध्य हैं परम हैं शिवपंथ नेता।
हैं वंद्य खेचर नरों असुरों सुरों के,
वे ध्येय पंच गुरु हों हम बालकों के।।

'जैन गीता'

ॐ

पंचपरमेष्ठी विधान प्रारम्भ

मंगलाचरण

दोहा

पंचम गति की प्राप्ति हित, पंच परम पद ध्याय।
परिवर्तन पाँचों नशें, मंगलकर सुखदाय।।1।।

चौबोला छंद

जय-जय पंच परम परमेष्ठी, आप सर्व जग हितकारी।
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, पूर्णज्ञान के हो धारी।।
काल अनंता बीत गया है, भवकानन में भटक रहे।
मोक्षपंथ ना सूझा अब तक, मोह जाल में अटक रहे।।2।।

पुण्योदय का उदय हुआ है, जिन कुल में आ जनम लिया।
वीतराग अरिहंत प्रभु का, श्रद्धा पूर्वक दरश किया।।
घाति रहित शत इंद्र पूज्य सब, अरहंतों को नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, सिद्धक्षेत्र को गमन करूँ।।3।।

मुनिगण नायक आतम ज्ञायक,आचारज उपकारी हैं।
दीक्षा दाता सूरीश्वर के,पद में धोक हमारी है।।
अंगपूर्वधर उपाध्याय को, पूर्णज्ञान हित वंदन है।
आत्मसाधना लीन मुनि का, भावों से अभिनंदन है।।4।।

स्व - पर तत्त्व का ज्ञान नहीं मैं, आत्म ज्ञान पाने आया।
कर्म फलों से लिप्त हुआ प्रभु, अब विरक्त होने आया।।

गुरुवर मुख से सुना है मैंने, जो जिन भक्ति करता है।
पाप पुण्य को शीघ्र नाशकर, मोक्षलक्ष्मी को वरता है।।5।।
पंच परम पद की भक्ति से, सब संकट मिट जाते हैं।
पाप-पुण्य में संक्रम करता, रोग शोक नश जाते हैं।।
इसीलिए मंगल कार्यों में, परमेष्ठी पद ध्यान धरूँ।
वीतरागता की भक्ति से, इष्ट परम पद प्राप्त करूँ।।6।।
जब तक श्वास रहे इस तन में,महामंत्र का स्मरण करूँ।
मंगलमय हो जीवन सारा, अंत समाधीमरण करूँ।।
कर्म मुझे भव-भव दुख देते, हे जिन! इनका नाश करो।
मैं हूँ निर्बल भक्त आपका, अतः हृदय मम वास करो।।7।।

पंच परमेष्ठी पूजन

स्थापना

चौबोला छंद

घातिकर्म से रहित पूज्य श्री, अरिहंतों को वंदन है।
बंध मुक्त सिद्धालय वासी, सिद्धों का अभिनंदन है।।
यतिनायक आचार्य सुगुरु को, श्रद्धा से मैं नमन करूँ।
अंग पूर्व के पाठी मुनिवर, उपाध्याय को हृदय धरूँ।।1।।

आत्म साधना लीन साधु का, सुमिरन कर निज को जानूँ।
इष्ट परम पद पाने हेतु, आत्म शक्ति को पहचानूँ।।

भाव सुमन लेकर आया हूँ, हृदय कमल पर वास करो।
परम पंच परमेष्ठी मेरे, सब विभाव का नाश करो।।2।।

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिजिनसमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिजिनसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिजिनसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(तर्ज :- नंदीश्वर श्री जिन....)

हे नाथ अनंतों बार, तन मल को धोया।
आतम में भरें विकार, शुद्ध न कर पाया।।
परमेष्ठी पंच महान, पूजन सुखकारी।
दो ज्ञानामृत का दान, जिनवर उपकारी।।1।।

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं....।

भव ताप विजेता नाथ, बनने मैं आया।
शुचि चंदन श्रद्धा साथ, लेकर मैं आया।।
परमेष्ठी पंच महान, पूजन सुखकारी।
दो समता रस का दान, जिनवर उपकारी।।2।।

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनं.... ।

अब तक जो पाया नाथ, सबका नाश हुआ।
प्रभु शाश्वत शुभ्र स्वभाव, लख निज भान हुआ।।

परमेष्ठी पंच महान, पूजन सुखकारी।
दो अक्षय निधि का दान, जिनवर उपकारी।।3।।

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.... ।

तव ज्ञान बाग में नाथ, गुणमय सुमन खिले।
ले वीतराग तरु छाँव, ब्रह्मानंद मिले।।
परमेष्ठी पंच महान, पूजन सुखकारी।
दो रत्नत्रय का दान, जिनवर उपकारी।।4।।

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.... ।

रस चखे अनंतों बार, तृप्त न हो पाया।
आत्मानुभूति रस स्वाद, पाने चरु लाया।।
परमेष्ठी पंच महान, पूजन सुखकारी।
दो चिदानंद रस दान, जिनवर उपकारी।।5।।

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं....।

ज्योतिर्मय सूरज आप, क्या मैं दीप धरूँ।
तव चरण दीप में नाथ, अपना माथ धरूँ।।
परमेष्ठी पंच महान, पूजन सुखकारी।
दो पूर्ण पवित्र सुज्ञान, जिनवर उपकारी।।6।।

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं.... ।

निज कर्मों से ही नाथ, मैं दुख पाता हूँ।
पर को ही दोषी मान, कर्म बढ़ाता हूँ।।

परमेष्ठी पंच महान, पूजन सुखकारी।
दो स्व-पर तत्त्व का ज्ञान, जिनवर उपकारी।।7।।

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं.... ।

मैं नंत काल से नाथ, दुख को भोग रहा।
फल चरण चढ़ाऊँ आज,शिवफल चाह रहा।।
परमेष्ठी पंच महान, पूजन सुखकारी।
दो महामोक्ष फल दान, जिनवर उपकारी।।8।।

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं.... ।

शिवपद अनर्घ्य अनमोल, प्राप्त न कर पाया।
शुभ अर्घ्य चढ़ाकर मोक्ष, पद पाने आया।।
परमेष्ठी पंच महान, पूजन सुखकारी।
दो शाश्वत शिवपद धाम,जिनवर उपकारी।।9।।

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं....।

प्रथमवलय अरहंतपरमेष्ठी अर्घ्यावली

जन्म के दश अतिशय

दोहा

जन्म ज्ञान दश देवकृत, चौदह अतिशय सार।
प्रातिहार्य वसु युक्त हो, नंत चतुष्टय धार।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

नरेन्द्र छंद

पुण्य सभी परमाणु तन के. सुंदर तन मन भाता।
कर्म नाश का श्रम करते पर, स्वेद नहीं है आता।।
पूर्व जन्म के तप बल से ही, होते हैं दश अतिशय।
जन्म समय से होते हैं ये, देते अर्हत् परिचय।।1।।

ॐ ह्रीं निःस्वेदत्वसहजातिशयगुणभूषित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

मुनि दशा तक आहार करते, पर मल-मूत्र न होता।
ध्यान अग्नि के प्रभाव से ही, रसमय परिणत होता।।
पूर्व...।।2।।

ॐ ह्रीं निर्मलतासहजातिशयगुणभूषित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

करुणा मूर्ति प्रभुवर तन में, श्वेत रुधिर ही होता।
जननी सम जग को सुख देते, दया भाव अघ धोता।।
पूर्व...।।3।।

ॐ ह्रीं क्षीरसमधवलरुधिरत्वसहजातिशयगुणभूषित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

सर्वांगों में सामुद्रिकता, सुंदर सुडौल काया।
अंगाकृति है अपूर्व जिनकी, जैसे कोई माया।।
पूर्व...।।4।।

ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थानसहजातिशयगुणभूषित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

वज्रवृषभनाराच संहनन, पुण्य कर्म से पाया।
मुक्तिरमा को वरने हेतु, इस शक्ती को पाया।।
पूर्व...।।5।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहननसहजातिशयगुणभूषित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

अतिशय मोहक रूप आपका, लोकोत्तर सुंदरता।
भव्य जीव को दर्श मात्र से, शुभ वैराग्य उमड़ता।।
पूर्व जन्म के तप बल से ही, होते हैं दश अतिशय।
जन्म समय से होते हैं ये, देते अर्हत् परिचय।।6।।

ॐ ह्रीं अनुपमरूपसहजातिशयगुणभूषित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

कल्पवृक्ष के पुष्पों जैसी, देह सुगंधित पाते।
भक्त भ्रमर बन पूजन करते, जिन यश को हैं गाते।।
पूर्व...।।7।।

ॐ ह्रीं सौगंध्यसहजातिशयगुणभूषित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

इक हजार अठ लक्षण पावन, प्रभु तन में होते हैं।
नौ सौ व्यंजन, शत अठ लक्षण, शंखादिक होते हैं।।
पूर्व...।।8।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रशुभलक्षणसहजातिशयगुणभूषित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

प्रबल पुण्य के कारण जिन ने,अतुल शक्ति को पाया।
महाप्रतापी समरथ शाली, जन्मत ही बल पाया।।
पूर्व...।।9।।

ॐ ह्रीं अतुलबलवीर्यसहजातिशयगुणभूषित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

हितमित मोहक मीठी वाणी, जैसे अमृत झरना।
सर्व जगत के प्रेम पात्र हैं, वाणी का क्या कहना।।
पूर्व...।।10।।

ॐ ह्रीं प्रियहितमधुरवचनातिशयगुणभूषित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

केवलज्ञान के दस अतिशय

ज्ञानोदय छंद

अर्हत् देव विचरते हैं तब, योजन शत सुभिक्ष होता।
स्वस्थ्य सुखी हो जाते हैं सब, मोह रोग भी क्षय होता।।
चार घातिया क्षय होते ही, दश अतिशय हो जाते हैं।
ऐसे केवलज्ञानी प्रभु के, चरणन शीश झुकाते हैं ।।11।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिक्षुशतयोजनसुभिक्षताकेवलज्ञानातिशयगुणभूषित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

पूर्णज्ञान होते ही स्वामी, बीस सहस कर अधर रहे।
गगन गमन करते करुणाकर,वसुधा को ना स्पर्श करे।।
चार...।।12।।

ॐ ह्रीं गगनगमनत्वकेवलज्ञानातिशयगुणभूषित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

जन्म जात जो वैर रखे हैं, प्रभु प्रभाव से मित्र हुए।
अभय प्रदाता प्रभु प्रभाव से, क्रूर जीव भी शांत हुए।।
चार...।।13।।

ॐ ह्रीं सर्वप्राणिवधाभाव केवलज्ञानातिशयगुणभूषित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

केवलज्ञानी हो जाने पर, कवलाहार नहीं करते।
मोह नाश हो जाने से तन पोषण कभी नहीं करते।।
चार...।।14।।

ॐ ह्रीं कवलाहाराभावकेवलज्ञानातिशयगुणभूषित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

अर्हत् जिन पर देव मनुज पशुगण उपसर्ग नहीं करते।
प्रभु समीपता पाते ही सब, अपने कल्मष को हरते।।
चार घातिया क्षय होते ही, दश अतिशय हो जाते हैं।
ऐसे केवलज्ञानी प्रभु के, चरणन शीश झुकाते हैं।।15।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभावकेवलज्ञानातिशयगुणभूषित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

समवसरण में श्रीजिनवर के, चारों दिश में मुख दिखते।
आत्म तेज का ही प्रभाव यह,सबको अपने से लगते।।
चार...।।16।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्वकेवलज्ञानातिशयगुणभूषित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

द्वादशांग विद्या के ईश्वर, सर्व अर्थ को जाने हैं।
वंदन करते भावों से हम, विद्यासागर माने हैं।।
चार...।।17।।

ॐ ह्रीं सर्वविद्येश्वरकेवलज्ञानातिशयगुणभूषित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

पूर्णज्ञानी का तन निगोदिया,जीव रहित हो जाता है।
तपो तेज से निर्मल होता, छाँव रहित हो जाता है।।
चार...।।18।।

ॐ ह्रीं छायारहितकेवलज्ञानातिशयगुणभूषित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

शक्तिहीन की पलके झपके, नंत वीर्य युत प्रभु रहे।
दूर हुए निद्रादिक जिनके, निर्निमेष ही दृष्टि रहे।।
चार...।।19।।

ॐ ह्रीं पक्ष्मस्पंदरहितकेवलज्ञानातिशयगुणभूषित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

परमौदारिक पुण्य देह में, नाखून केश न बढ़ते हैं।
मल में परिणत होने वाले, परमाणु नहीं आते हैं।।
चार घातिया क्षय होते ही, दश अतिशय हो जाते हैं।
ऐसे केवलज्ञानी प्रभु के, चरणन शीश झुकाते हैं।।20।।

ॐ ह्रीं समाननखकेशत्वकेवलज्ञानातिशयगुणभूषित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

देवकृत चौदह अतिशय

चौपाई

प्रभु की अर्ध मागधी वाणी, सब भाषामय है कल्याणी।
चौदह अतिशय देव करे हैं, तीर्थंकर को नमन करे हैं।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधीभाषामयदिव्यध्वनिदेवोपनीतातिशयगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

सभी परस्पर मैत्री धारे, प्रभु समीप वैर तज आवे।
प्रीतिंकर सुर वैर मिटावें, श्री जिनवर को शीश नमावें।।22।।

ॐ ह्रीं सर्वजनमैत्रीभावदेवोपनीतातिशयगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

छह ऋतुओं के फल फलते हैं, ऋतुओं के सब क्रम रुकते हैं।
धरती भी पुलकित हो जाती, जिन वैभव लख हर्ष मनाती।।23।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादिशोभिततरुपरिणामदेवोपनीतातिशयगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

दर्पण सम निर्मल हो धरती, चार कोस तक पावन रहती।
रत्नमयी मनहारी ऐसी, शुद्ध स्फटिक मणि के ही जैसी ।।24।।

ॐ ह्रीं आदर्शतलप्रतिमारत्नमयीमहीदेवोपनीतातिशयगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

जहाँ प्रभु का विहार होता, मंद सुगंध पवन है चलता।
वायुकुमार सूचना लाते, प्रभु विहार करके हैं आते।।25।।

ॐ ह्रीं सुगंधितविहरणमनुगतवायुत्वदेवोपनीतातिशयगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

परमानंद सभी को होता, जब जिनवर का विहार होता।
ऋद्धि सिद्धियाँ सब मिल जाती, पूर्णज्ञान की महिमा आती।।26।।

ॐ ह्रीं सर्वजनपरमानंदत्वदेवोपनीतातिशयगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

दश दिश निर्मल हो जाती हैं, कंटक धूली हट जाती है।
वायुकुमार भू स्वच्छ बनाते, प्रभु विहार में हर्ष मनाते।।27।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमितधूलिकंटकादिदेवोपनीतातिशयगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

मेघकुमार देव नमते हैं, नीर सुगंधित बरसाते हैं।
भविजन चातक सम हर्षाते, तीर्थंकर प्रभु के गुण गाते।।28।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृतगंधोदकवृष्टिदेवोपनीतातिशयगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

कमल रचे हैं आगे पीछे, एक प्रभु के पद के नीचे।
स्वर्ण दलों से खिले हुए हैं, सब दो शत पच्चीस हुए हैं।।29।।

ॐ ह्रीं जिनचरणकमलतलस्वर्णकमलरचनादेवोपनीतातिशयगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

फल फूलों से वृक्ष लदे हैं, हरिताभा से खेत भरे हैं।
शाली आदिक धान्य फले हैं, जिन दर्शन से कर्म जले हैं।।30।।

ॐ ह्रीं फलभारनम्रशालिदेवोपनीतातिशयगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

नभ स्फटिक सम निर्मल होता,जब जिनवर का विहार होता।
शरद काल सम नभ अतिशायी, जिन महिमा है मुक्तीदायी।।31।।

ॐ ह्रीं शरत्कालवन्निर्मलाकाशदेवोपनीतातिशयगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

देव चतुर्विध गुण गाते हैं, सारे नभ को गुँजाते हैं।
देवों के भी देव पधारे, आओ प्रभु वाणी उर धारें।।32।।

ॐ ह्रीं नभसिजिनवरजयघोषरूपदेवोपनीतातिशयगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं..।

रवि सम तेज सहस हैं आरे, यक्ष इंद्र निज सिर पर धारे।
धर्मचक्र आगे चलता है, इंद्रिय जय सूचित करता है।।33।।

ॐ ह्रीं यक्षेन्द्रशीशोपरिस्थितधर्मचक्रचतुष्टयदेवोपनीतातिशयगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

मंगल द्रव्य भी आगे चलते, मंगलमयी सूचना करते।
ध्वजा छत्र कलशादिक सारे, पाप गलाते पुण्य सँवारे।।34।।

ॐ ह्रीं सहचलायमानअष्टमंगलद्रव्यरूपदेवोपनीतातिशयगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

अष्ट प्रातिहार्य

नरेन्द्र छंद

शत इंद्रों से अर्चित अर्हत्, प्रातिहार्य वसु धारी।
प्रथम अशोक वृक्ष है इसमें, मरकत मणिदल धारी।।
पार्थिव देव रचित है प्रभु से, द्वादश गुणी ऊँचाई।
शोक रहित हो प्रभु सन्निधि से, यह प्रभु की प्रभुताई।।35।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षमहाप्रातिहार्यगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

सघन पुष्प की वृष्टी करते, नभ से सुर हर्षाते।
ऊर्ध्वमुखी हो फूल बरसते, विनम्रता सिखलाते।।
भवि के विधि बंधन नीचे हो, ऐसा जिनवर मत है।
कल्पतरू मंदार बरसते, मानो ये जिनवच हैं।।36।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिमहाप्रातिहार्यगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

सालंकृत हो देव शरण आ, चौंसठ चँवर ढुराते।
नम्रभूत हो श्वेत चँवर ये, विनय पाठ सिखलाते।।
जिन पद में आ तीन योग से, जो भी नमन करे हैं।
आत्म ध्यान कर कर्म नाशकर, शिव में गमन करे हैं।।37।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठिचामरमहाप्रातिहार्यगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

घाति कर्म का क्षय होते ही, भामंडल बन जाता।
कोटि सूर्य की कांती हरता, चंदा भी शरमाता।।
सात भवों को भव्य देखकर , निज वैभव को पाता।
स्वयं अचेतन होकर भी वह, प्रभु प्रभा बतलाता।।38।।

ॐ ह्रीं भामंडलमहाप्रातिहार्यगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

जागो-जागो जग के प्राणी, प्रभु जगाने आये।
वीणा मुरली दुंदुभि बाजे, वाद्य बजाके गाये।।
मोक्षनगर में आना है तो, जिनवर शरणा ले लो।
गगन पंथ में देवों द्वारा, बजे नगाड़े सुन लो।।39।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभिमहाप्रातिहार्यगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

तीन जगत के ईश आप हैं, तीन छत्र बतलाते।
गुरू लघु लघुतम क्रम से ऊपर, शुभ्र रत्नमय होते।।
छत्र चंद सम मुक्ता लड़ियाँ, मानो तारागण हैं।
छत्र छाँव जिनवर की पाऊँ, जीवन मम अर्पण है।।40।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहाप्रातिहार्यगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

अर्हत् के गंभीर वचन को, पीते प्रमुदित होते।
मोह तमस को हरने वाले, सभी समझ हैं पाते।।
प्रभु की वाणी इक योजन तक, दूर सुनाई देती।
अठरह सात शतकमय भाषी, स्वानुभूति को देती।।41।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिमहाप्रातिहार्यगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

समवसरण के मध्य रत्न का, सिंहासन मन मोहे।
मध्य सहसदल कमल सुशोभित, अधर प्रभु जी सोहे।।
सेवक बनकर देव प्रभु की, भक्ती कर हर्षाते।
जग वैभव सब छोड़ दिया पर, वैभव पीछे आते।।42।।

ॐ ह्रीं सिंहासनमहाप्रातिहार्यगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

अनंत चतुष्टय

सखी छंद

दर्शनावरणी क्षय करते, केवलदर्शन को वरते।
प्रभु लोकालोक विलोकी, हैं वंदन नाथ त्रिलोकी।।43।।

ॐ ह्रीं अनंतदर्शनगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

प्रभु नंत ज्ञान के धारी, ज्ञानावरणी क्षयकारी।
सब द्रव पर्यय गुण जाने, सर्वज्ञ सर्व पहचाने।।44।।

ॐ ह्रीं अनंतज्ञानगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

जग के नश्वर सुख छोड़े, सब बंध मोह के तोड़े।
प्रभु ने अनंत सुख पाया, मैं शिवसुख पाने आया।।45।।

ॐ ह्रीं अनंतसौख्यगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

हे अनंत बल के स्वामी, क्षय अंतराय जगनामी।
मैं अनंत बल को पाऊँ, अर्हत् पद शीश नवाऊँ।।46।।

ॐ ह्रीं अनंतवीर्यगुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य - नरेन्द्र छंद

छियालीस गुण युक्त जिनेश्वर, दिव्यध्वनि सुखकारी।
शीघ्र सिद्ध पद पाने वाले, सर्व जगत उपकारी।।
परम पूज्य अर्हत् जिनवर को, अर्घ्य चढ़ाने आया।
वीतराग जिन सम न दूजा, शीश झुकाने आया।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडित अर्हत्परमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

द्वितीयवलय सिद्धपरमेष्ठी अर्घ्यावली

दोहा

अष्ट कर्म का नाशकर, अष्टम वसुधा पाय।
वसु गुणधारी सिद्धप्रभु, चिदानंद छलकाय।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

सखी छंद

जब ज्ञानावरण नशाया, तब केवलज्ञान उपाया।
हे सिद्धप्रभु जिनराई, तव पूजन मुक्तीदाई।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्मविनाशक अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं....।

दर्शन आवरण विनाशी, गुण अनंत दर्शनराशी।
हे सिद्धप्रभु जिनराई, तव पूजन मुक्तीदाई।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणकर्मविनाशक अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

द्वय वेदनीय क्षयकारी, गुण अव्याबाध सु-धारी।
हे सिद्धप्रभु जिनराई, तव पूजन मुक्तीदाई।।3।।

ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मविनाशक अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

सब मोह कर्म रिपु जीते, क्षायिक समकित रस पीते।
हे सिद्धप्रभु जिनराई, तव पूजन मुक्तीदाई।।4।।

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मविनाशक अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

प्रभु आयु कर्म चउ नाशे, अवगाहन सुगुण प्रकाशे।
हे सिद्धप्रभु जिनराई, तव पूजन मुक्तीदाई।।5।।

ॐ ह्रीं आयुकर्मविनाशक अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

विधि नाम का नाम मिटाया, सूक्ष्मत्व सुगुण प्रगटाया।
हे सिद्धप्रभु जिनराई, तव पूजन मुक्तीदाई।।6।।

ॐ ह्रीं नामकर्मविनाशक अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

द्वय गोत्र कर्म विनशाया, गुण अगुरूलघु को पाया।
हे सिद्धप्रभु जिनराई, तव पूजन मुक्तीदाई।।7।।

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मविनाशक अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

प्रभु अंतराय विनशाया, औ नंत वीर्य गुण पाया।
हे सिद्धप्रभु जिनराई, तव पूजन मुक्तीदाई।।8।।

ॐ ह्रीं अंतरायकर्मविनाशक अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

जिन सिद्ध अष्ट गुणधारी, हैं शुद्ध अचल अविकारी।
पूर्णार्घ्य चढ़ाने लाया, वसु कर्म नशाने आया।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्मविनाशकअष्टगुणधारक अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

तृतीयवलय आचार्यपरमेष्ठी अर्घ्यावली

दोहा

छत्तीस गुणधारी यति, सूरीश्वर मुनिनाथ।
तव पद पंकज में सदा , हाथ जोड़ नत माथ।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

सखी छंद

मन गुप्ति मुनीश्वर धारे, सब अघ को आप निवारे।
गुरु दर्शन शिव सुखकारा, चरणों में नमन हमारा।।1।।

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

धर मौन, गुप्ति वच पाले, शिवपुर में जाने वाले।
गुरु दर्शन शिव सुखकारा, चरणों में नमन हमारा।।2।।

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

नहीं तन को विचलित करते,मुनि काय गुप्ति को धरते।
गुरु दर्शन शिव सुखकारा, चरणों में नमन हमारा।।3।।

ॐ ह्रीं कायगुप्तिसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

चौपाई

अष्ट अंग युत उर में लाना,नाम दर्शनाचार प्रधाना।
सम्यक्दर्शन है सुखकारा, सूरीश्वर को नमन हमारा।।4।।

ॐ ह्रीं दर्शनाचारसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

द्रव गुण पर्यय जाननहारा, करें सदा अज्ञान प्रहारा।
ज्ञानाचार सदा सुखकारी, सूरीश्वर पाले हितकारी।।5।।

ॐ ह्रीं ज्ञानाचारसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

गुप्ति समिति व्रत पालनहारे,नग्न दिगम्बर मुद्रा धारे।
तेरह विध चारित्र प्रधाना,पालन कर पाते शिवधामा।।6।।

ॐ ह्रीं चारित्राचारसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

द्वादश विध तप से श्रृंगारे,बल परकासे कर्म निवारे।
तपाचार धारे मुनिनाथा, सदा नमाऊँ पद में माथा।।7।।

ॐ ह्रीं तपाचारसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

पाँच भेद युत वीर्याचारा,धारे शिवमग करें प्रचारा।
कर्म नाश को शस्त्र समाना, नंत वीर्य का कारण जाना।।8।।

ॐ ह्रीं वीर्याचारसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

ज्ञानोदय छंद

त्रय संध्या में आचारज मन वचन काय वश रखते हैं।
सामायिक आवश्यक करते, निज में ही रत रहते हैं।।
योगों की अस्थिरता मिटती,समता की ज्योति जलती।
सामायिक में लीन देख कर, मुक्तिरमा भी आ वरती।।9।।

ॐ ह्रीं समतावश्यकसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

आदिनाथ तीर्थंकर से प्रभु, महावीर अंतिम जिनवर।

सिद्धक्षेत्र पाने को करते, जिन गुणगान सदा सुखकर।।
यशः कीर्ति फैले चहुँ दिश में, स्तुति करें तीर्थंकर की।
सम्यक् श्रद्धा धरकर मैं भी, करूँ वंदना यतिवर की।।10।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिस्तवावश्यकसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

अष्ट कर्म को नष्ट किया अष्टम वसुधा को प्राप्त किया।
सिद्ध परम पद पावन भाया,अरहंतों को नमन किया।।
करें किसी इक जिन का वंदन, स्वीकारो वंदन स्वामी।
वंदनीय आचार्य मुनीश्वर, पार करो हे जगनामी।।11।।

ॐ ह्रीं वंदनावश्यकसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

दोषों को प्रतिक्रमण नीर से, आतम शुद्ध कराने काज।
तीन बार दिन में त्रियोग से, आलोचन करते मुनिराज।।
जो अज्ञान प्रमाद भाव से, पूर्व काल में दोष किया।
इसीलिए श्रीमहामुनि ने, भाव सहित प्रतिक्रमण किया।।12।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणावश्यकसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

मन वच तन सब वश में करके, अवश्य प्रत्याख्यान धरे।
पंचेन्द्रिय के विषय जहर हैं, चिंतन यह दिन-रात करे।।
परद्रव्यों से पृथक् स्वयं का, योगीजन नित ध्यान धरे।
भगवन् बनने अणु मात्र का, यतिवर प्रत्याख्यान करे।।13।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावश्यकसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

लेश मात्र नहीं तन से ममता, आचारज गुण पाल रहे।
सुमेरु सम निश्चल रहकर ही, निज आतम में लीन रहे।।
वस्तु स्वरूप विचार करें तन से ममत्व नहीं धार रहे।
कायोत्सर्ग महा आवश्यक, पाले मुनि शिवनार वरे।।14।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गावश्यकसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

चौपाई

क्रोध रिपु के नाशनहारे, क्षमा धर्म के पालनहारे।
जैनाचार्य मुनीश हमारे, भवि जीवों के आप सहारे।।15।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

मान कषाय सदा निरवारे, मार्दव भाव हृदय में धारे।
जैनाचार्य मुनीश हमारे, भवि जीवों के आप सहारे।।16।।

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

निश्छल बालक सम ऋजुताई, माया तज धारे मुनिराई।
जैनाचार्य मुनीश हमारे, भवि जीवों के आप सहारे।।17।।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

परद्रव्यों की वांछा त्यागी, लोभ रहित सच्चे वैरागी।
जैनाचार्य मुनीश हमारे, भवि जीवों के आप सहारे।।18।।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

सत्य धर्म पाले सुखदाई, झूठ वचन त्यागे दुखदाई।
जैनाचार्य मुनीश हमारे, भवि जीवों के आप सहारे।।19।।

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

संयमपति उत्तम मुनिराजा, कर्मनाश होते शिवराजा।
जैनाचार्य मुनीश हमारे, भवि जीवों के आप सहारे।।20।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

द्वादश विध तप तेज धरे हैं, कर्म शिला चकचूर करे हैं।
जैनाचार्य मुनीश हमारे, भवि जीवों के आप सहारे।।21।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

अंतः बाह्य परिग्रह त्यागी, मोह तजा आतम अनुरागी।
जैनाचार्य मुनीश हमारे, भवि जीवों के आप सहारे।।22।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

छोड़ वमन दिक्अम्बर धारे, धन परिवार न लेश विचारे।
जैनाचार्य मुनीश हमारे, भवि जीवों के आप सहारे।।23।।

ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन्यधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

ब्रह्मचर्य व्रत में सिरताजा, ब्रह्म लीन उत्तम ऋषिराजा।
जैनाचार्य मुनीश हमारे, भवि जीवों के आप सहारे।।24।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

अडिल्ल छंद

एक-एक कर कई उपवास करें यति।
एक वर्ष तप तपे होय मुक्तिपति।।
अनशन तपधारी यतिराज महान हैं।
भाव सहित वंदूँ ऋषिराज प्रणाम है।।25।।

ॐ ह्रीं अनशनतपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

एक ग्रास या लेते है दो ग्रास हैं।
रहते किन्तु निज स्वरूप के पास हैं।।
ऊनोदर तपधारी सूरी महान हैं।
भाव सहित वंदूँ ऋषिराज प्रणाम है।।26।।

ॐ ह्रीं अवमौदर्यतपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

भोजन पान का कर लेते निर्धार हैं।
निज स्वरूप का करते सदा विचार हैं।।
व्रत परिसंख्या तपोनिधि को करूँ नमन।
नियम रूप से निज स्वरूप का करूँ मनन।।27।।

ॐ ह्रीं वृतिपरिसंख्यानतपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

एक दोय या षट् रस त्याग यति करें।
अशन का ही राग त्याग तप आदरें।।
रस परित्याग सुव्रत महा गंभीर है।
नमूँ यतिवर पहुँचे भवदधि तीर हैं।।28।।

ॐ ह्रीं रसपरित्यागतपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

शयन भूमि पर करते पिछली रात में।
निज आतम से करते गुरुवर बात हैं।।
विविक्तशय्यासन तपधारी नाथ हैं।
महागुणी के पद में मेरा माथ है।।29।।

ॐ ह्रीं विविक्तशय्यासनतपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

तन की माता परमाणु है विचारते।
जड़ से भिन्न निजातम रूप निहारते।।
निशदिन धारे कायक्लेश मुनिराज हैं।
भव समुद्र के तारक गुरु जहाज हैं।।30।।

ॐ ह्रीं कायक्लेशतपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

प्रमाद वश हो जाए यदि कुछ भूल है।
शीघ्र करें निज को आगम अनुकूल हैं।।
दोषों का प्रायश्चित करते हैं सदा।
ऐसे निश्छल यति को पूजूँ मैं मुदा।।31।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चिततपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

विनय मोक्ष का द्वार जिनेश्वर ने कहा।
महागुणी से नेह किया मद को दहा।।
चऊ प्रकार विनय को आचारज धरें।
ज्ञान दर्श उपचार चरित को आदरें।।32।।

ॐ ह्रीं विनयतपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

दश विध वैय्यावृत्य करें यतिराज हैं।
मुनि सेवा से शीघ्र होय जिनराज हैं।।
निश्छल मुनि सेवा में दिखते लीन जो।
स्व स्वभाव में रहते हैं तल्लीन जो।।33।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्यतपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

चार बार चउ अनुयोगों को ध्यावते।
आगम से नित शुद्धातम अवलोकते।।
पंच प्रकार करे स्वाध्याय यतीश हैं।
पाते निज वैभव शिवदाय मुनीश हैं।।34।।

ॐ ह्रीं स्वाध्यायतपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

तन से ममता भाव तजे निज रूप हैं।
परमातम में लीन बने शिवभूप हैं।।
तप व्युत्सर्ग सहज आगम अनुकूल है।
भवसागर से पार करें सुखमूल है।।35।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गतपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

द्वादश तप में श्रेष्ठ ध्यान यह तप कहा।
मुक्तिवधू से मिलने का साधन रहा।।
ध्यानाग्नि से कर्म शत्रु को जला रहे।
ऐसे श्री गुरुवर को शीश नवा रहे।।36।।

ॐ ह्रीं ध्यानतपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ...।

पूर्णार्घ्य

छत्तीस गुण के धारी यति की वंदना।
भक्ति भाव से करूँ आज आराधना।।
जल फल आदिक अर्घ्य बनाकर लाया हूँ।
सूरीश्वर की पूजा करने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशतगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घ्यं ...।

चतुर्थवलय उपाध्यायपरमेष्ठी अर्घ्यावली

दोहा

ज्ञान रतन भण्डार हैं, उपाध्याय गुण खान।
अंगपूर्व धर को नमूँ, बनने को भगवान।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चौपाई

मुनिवर के आचार कहे हैं, गुप्ति समिति व्रत बतलाएँ हैं।
'आचारांग' नमूँ जिनवाणी, उपाध्याय हैं ज्ञानी ध्यानी।।1।।

ॐ ह्रीं आचाराङ्गज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

विनय अध्ययन धर्म की क्रिया,स्वसमय परसमय की चर्या।
'सूत्रकृतांग' है तारणहारा, उपाध्याय को नमन हमारा।।2।।

ॐ ह्रीं सूत्रकृताङ्गज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

द्रव्य तत्त्व के भेद कहे हैं, एकादिक सब स्थान कहे हैं।
उपाध्याय 'स्थानांग' धरे हैं, भव्यों का उद्धार करे हैं।।3।।

ॐ ह्रीं स्थानाङ्गज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

द्रव्य क्षेत्र औ काल अपेक्षा, जो समान है भाव अपेक्षा।
पाठक 'समवायांग' सु-धारी, ज्ञान मुझे देना अविकारी।।4।।

ॐ ह्रीं समवायाङ्गज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

जीव नित्य या अनित्य भी है, साठ सहस प्रश्नोत्तर भी हैं।
अंग धरे 'व्याख्याप्रज्ञप्ती', उपाध्याय की कर लूँ भक्ती।।5।।

ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्त्यङ्गज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

श्री जिनवर की ध्वनि बताएँ, तीर्थंकर की धर्म कथाएँ।
'ज्ञातृधर्मकथांग' सु प्यारा, उपाध्याय को नमन हमारा।। 6।।

ॐ ह्रीं ज्ञातृधर्मकथाङ्गज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

श्रावक की प्रतिमा हैं ग्यारा, षट् आवश्यक वर्णन न्यारा।
'उपासकाध्ययनंग' नमन है, उपाध्याय मुनि को वंदन है।।7।।

ॐ ह्रीं उपासकाध्यनाङ्गज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

दश दश मुनि प्रत्येक तीर्थ में, सह उपसर्ग गए शिवपुर में।
'अंतःकृद्दशअंग' ये कहता, उपाध्याय गुरू को मैं नमता।।8।।

ॐ ह्रीं अंतःकृद्दशाङ्गज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

दश दश मुनि प्रत्येक तीर्थ में, सह उपसर्ग गए अनुत्तर में।
'अंगअनुत्तरउपपादिकदश', नमन करूँ मन वच तन कर वश।।9।।

ॐ ह्रीं अनुत्तरोत्पादकदशाङ्गज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

चार कथा का वर्णन करता, 'प्रश्नव्याकरण' अंग सुहाता।
उपाध्याय नित ज्ञान मगन हैं, सिद्धदशा की लगी लगन है।।10।।

ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकरणाङ्गज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

कर्मफलों का वर्णन इसमें, 'अंगविपाकसूत्र' वंदूँ मैं।
उपाध्याय इस अंग के धारी, देते ज्ञान परम उपकारी।।11।।

ॐ ह्रीं विपाकसूत्राङ्गज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

ज्ञानोदय छंद

चौदह पूर्व कहे आगम में, दिव्यध्वनि में सुना गया।
व्यय 'उत्पाद' ध्रौव्य का वर्णन,प्रथम पूर्व में किया गया।।
पूर्व ज्ञानधर उपाध्याय को, मन वच तन से नमन करूँ।
पूर्णज्ञान को प्राप्त करूँ मैं, सिद्धालय को गमन करूँ।।12।।

ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

सम्यक् नय मिथ्यानय से यह, द्रव्य तत्त्व वर्णन करता।
द्वितीय पूर्व 'अग्रायणीय' है, षट्खंडागम को कहता।।
पूर्व... ।।13।।

ॐ ह्रीं अग्रायणीयपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

आत्म वीर्य परवीर्य द्रव्य गुण, पर्यय शक्ति बतलाता।
तप संयम की शक्ति को, 'वीर्यानुवाद' ये दर्शाता।।
पूर्व ज्ञानधर उपाध्याय को, मन वच तन से नमन करूँ।
पूर्णज्ञान को प्राप्त करूँ मैं, सिद्धालय को गमन करूँ।।14।।

ॐ ह्रीं वीर्यानुवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

छह द्रव्यों के स्वपर चतुष्टय, अस्ति नास्ति आदिक कहता।
'पूर्व अस्तिनास्तिप्रवाद' यह, सप्त भंग को दर्शाता।।
पूर्व...।।15।।

ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

पाँच ज्ञान के भेदों का जो, वर्णन करता भक्ती से।
'ज्ञानप्रवादपूर्व' ज्ञान यह, मिलन कराता मुक्ती से।।
पूर्व...।।16।।

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

' सत्यप्रवाद ' वचन गुप्ति दश,सत्य और मौनादिक का।
वचन प्रयोग शब्द उच्चारण,कंठ आदि स्थानादिक का।।
पूर्व...।।17।।

ॐ ह्रीं सत्यप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

' आत्मप्रवाद ' आत्मसम्बन्धी, कर्ता भोक्ता दर्शाता।
निश्चय से है जीव शुद्ध व्यवहार विकारी है कहता।।
पूर्व...।।18।।

ॐ ह्रीं आत्मप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

कर्मों की लीला कर्मों में, फिर भी मोही भरमाता।
'कर्मप्रवादपूर्व' कर्मों की सभी दशाएँ बतलाता।।
पूर्व ज्ञानधर उपाध्याय को, मन वच तन से नमन करूँ।
पूर्णज्ञान को प्राप्त करूँ मैं, सिद्धालय को गमन करूँ।।19।।

ॐ ह्रीं कर्मप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

द्रव्य क्षेत्र कालादि से व्रत, त्याग विधि को समझाता।
'प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व' यम, नियम करो यह भी कहता।।
पूर्व... ।।20।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

महान विद्या कही पाँच सौ, लघु सात सौ बतलाई।
मंत्र तंत्र विद्या सिद्धि 'विद्यानुपूर्व' में दिखलाई।।
पूर्व... ।।21।।

ॐ ह्रीं विद्यानुवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

सूर्य चन्द्र ग्रह सब नक्षत्रों, तारों का संचार कहा।
ग्यारहवें 'कल्याणवाद' में गर्भादिक कल्याण महा।।
पूर्व... ।।22।।

ॐ ह्रीं कल्याणानुवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

अष्ट अंग युत आयुर्वेद में, काय चिकित्सा प्राणायाम।
'प्राणावायप्रवाद पूर्व' में, वर्णन है मैं करूँ प्रणाम।।
पूर्व... ।।23।।

ॐ ह्रीं प्राणानुवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

छंद नृत्य व्याकरण शिल्प औ, पुरूषादिक लक्षण कहता।
जो नमता 'क्रियाविशाल' को, सारा जग उसको नमता।।
पूर्व ज्ञानधर उपाध्याय को, मन वच तन से नमन करूँ।
पूर्णज्ञान को प्राप्त करूँ मैं, सिद्धालय को गमन करूँ।।24।।

ॐ ह्रीं क्रियाविशालपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

तीन लोक का स्वरूप कहता, मोक्ष विधि को बतलाता।
'लोकबिंदुसारपूरव' यह, बीजगणित को समझाता।।
पूर्व... ।।25।।

ॐ ह्रीं लोकबिंदुपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

ग्यारह अंग चतुर्दश पूर्वी, उपाध्याय को नमन करूँ।
ज्ञान ध्यान में लीन मुनि का, शुभ भावों से दर्श करूँ।।
शुद्ध अष्ट द्रव्यों को लेकर, पूजन करने आया हूँ।
आत्म ज्ञान दाता पाठक को, अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं पंचविंशतिगुणसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

पंचमवलय साधुपरमेष्ठी अर्घ्यावली

दोहा

अट्ठाईस गुण को धरें, आत्म साधना लीन।
सर्व साधु गण को नमूँ, करूँ कर्म मल क्षीण।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अडिल्ल छंद

त्रय थावर जीवों को निज सम जानते।
दयासिंधु मुनि राग-द्वेष ना धारते।।
बाह्याभ्यंतर रत्नत्रय गुण धार हैं।
साधु चरण में वंदन बारम्बार है।।1।।

ॐ ह्रीं अहिंसामहाव्रतधारक साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

पर पीड़ा कर वचन मुनि न कहते हैं।
राग-द्वेष वश मिथ्यालाप न करते हैं।।
बाह्याभ्यंतर ...।।2।।

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारक साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

बिना दिए जल मिट्टी भी लेते नहीं।
पर वस्तु पर भावों से आसक्त नहीं।।
बाह्याभ्यंतर ...।।3।।

ॐ ह्रीं अचौर्यमहाव्रतधारक साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

आत्म ब्रह्म में लीन रहें अविकार हैं।
सर्व नारी से विरक्त तारणहार हैं।।
बाह्याभ्यंतर ...।।4।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यमहाव्रतधारक साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

चौदह अंतर बाह्य परिग्रह दश तजें।
निर्ममत्व पर से शुद्धातम को भजें।।

बाह्याभ्यंतर रत्नत्रय गुण धार हैं।
साधु चरण में वंदन बारम्बार है।।5।।

ॐ ह्रीं परिग्रहत्यागमहाव्रतधारक साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

तज प्रमाद चउकर प्रासुक भू देखकर।
चले कार्य वश दिन में हिंसा टालकर।।
ईर्या समिति धारी मुनि की वंदना।
अर्घ्य चढ़ाकर करूँ भाव से अर्चना।।6।।

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिधारक साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

विकथा पर निंदा तज हित मित वच कहें।
मानो मुख से अमृत का झरना बहे।।
भाषा समिति धारी मुनि की वंदना।
अर्घ्य चढ़ाकर करूँ भाव से अर्चना।।7।।

ॐ ह्रीं भाषासमितिधारक साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

अशन करें तप हेतु तन पोषे नहीं।
दोष छ्यालीस बिन नव कोटि शुद्ध ही ।।
समिति एषणा धारी मुनि की वंदना।
अर्घ्य चढ़ाकर करूँ भाव से अर्चना।।8।।

ॐ ह्रीं एषणासमितिधारक साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

उपकरणों को देख शोध कर लें धरें।
प्रमाद तजकर जीवों की रक्षा करें।।

निक्षेपण आदान समिति धर वंदना।
अर्घ्य चढ़ाकर करूँ भाव से अर्चना।।9।।

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिधारक साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

निर्जन्तुक भूमि पर मल को त्यागते।
प्रमाद तज मुनि दया धर्म को पालते।।
समिति प्रतिष्ठापन धारी की वंदना।
अर्घ्य चढ़ाकर करूँ भाव से अर्चना।।10।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिधारक साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

आठ भेद स्पर्शन दुःख या सुखकारी।
राग-द्वेष नहीं करते मुनिवर हितकारी।।
अक्ष विजेता मुनिवर की पूजन करूँ।
शीश नवाकर हाथ जोड़ वंदन करूँ।।11।।

ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रियजयी साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

चउविध भोजन सरस विरस प्रिय अप्रिय हो।
निजानंद रस भोगी उसमें लिप्त न हो।।
अक्ष ...।।12।।

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रियजयी साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

सुगंध दुर्गंधित में राग न द्वेष हो।
घ्राणेन्द्रिय जेता को मेरा नमन हो।।

अक्ष विजेता मुनिवर की पूजन करूँ।
शीश नवाकर हाथ जोड़ वंदन करूँ ।।13।।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रियजयी साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

रूप विषय में राग-द्वेष न करते हैं।
ज्ञान चक्षु से आत्म रूप को लखते हैं।।
अक्ष ...।।14।।

ॐ ह्रीं चक्षुरिन्द्रियजयी साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

जड़ औ चेतन के शब्दों से विरक्त हैं।
स्वानुभूति के गीतों में अनुरक्त हैं।।
अक्ष... ।।15।।

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रियजयी साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

सखी छंद

सुख-दुख में समता रखते, निज समयसार में रमते।
त्रय बार करें सामायिक, मन वचन और शुभ कायिक।।16।।

ॐ ह्रीं समतावश्यकसहित साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

सब तीर्थंकर का कीर्तन, करते त्रियोग आराधन।
मुनि वीतराग थुति उचरे, फिर मुक्तिरमा संग विचरे।।17।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिस्तवावश्यकसहित साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

इक तीर्थंकर का वंदन, करते सम्यक् आराधन।
आवश्यक वंदन करते, मुनि शिवरमणी को वरते।।18।।

ॐ ह्रीं वंदनावश्यकसहित साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

सब दुष्कृत मिथ्या करने, व्रत को निर्दोष बनाने।
प्रतिक्रमण और आलोचन, मुनि करते आत्मालोकन।।19।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणावश्यकसहित साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

ना दोष अनागत में हो, निर्दोष चरित पालन हो।
कर प्रत्याख्यान मुनीश्वर, बनते मुक्ति के ईश्वर।।20।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावश्यकसहित साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

तन से ममत्व ना रखते, मुनि कायोत्सर्ग को धरते।
षट् आवश्यक धर वंदन, करूँ पाप विधि का खंडन।।21।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गावश्यकसहित साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

नरेन्द्र छंद

केशलोंच उपवास सहित, दो तीन चउ महीने में।
उत्तम मध्यम जघन विधि से, क्लेश करे ना मन में।।
देह धरे पर वैदेही सम, आत्म साधना करते।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ा हम, गुरू वंदना करते।।22।।

ॐ ह्रीं केशलुञ्चनगुणसहित साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

बाह्याभ्यंतर नग्न रहे मुनि, भेष दिगम्बर धरते।
यथाजात बालक सम निश्छल, चिदानंद में रहते।।
देह... ।।23।।

ॐ ह्रीं आचेलक्यगुणसहित साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

तत्त्व ज्ञान से कर्म मैल धो, आतम शुद्ध करे हैं।
जल्ल मल्ल से लिप्त देह पर व्रत अस्नान धरे हैं।।
देह धरे पर वैदेही सम, आत्म साधना करते।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ा हम, गुरू वंदना करते।।24।।

ॐ ह्रीं अस्नानगुणसहित साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

पिछली रात में भूमि पर ही, अल्प शयन मुनि करते।
आत्म निधि की रक्षा करते, जाग्रत मुनिवर रहते।।
देह... ।।25।।

ॐ ह्रीं क्षितिशयनगुणसहित साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

वैरागी मुनि दांतों को ना, किसी चूर्ण से घिसते।
धन्य-धन्य हैं साधु ध्यान से, आत्मशुद्धि नित करते।।
देह .....।। 26।।

ॐ ह्रीं अदंतधावनगुणसहित साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

बिना सहारे खड़े-खड़े ही, कर में आहार करते।
तीन जगह की भूमि लखकर, दोष रहित आचरते।।
देह... ।।27।।

ॐ ह्रीं स्थितिभोजनगुणसहित साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

ज्ञानामृत का भोजन लेते, प्रतिपल सच्चे मुनिवर।
इसीलिए तन को दिन में इक बार ही देते गुरुवर।।
देह... ।।28।।

ॐ ह्रीं एकभक्तगुणसहित साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

चौबोला छंद

पंच महाव्रत पंच समिति औ, पंचेन्द्रिय जय करते हैं।
षट् आवश्यक पालन करते, सप्त शेष गुण धरते हैं।।
अट्ठाईस गुणों के धारक, साधु साधना में रहते।
पूर्ण अर्घ्य से पूजा करके, नम्र भाव से हम नमते।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिगुणसहित सर्वसाधुपरमेष्ठिभ्य: पूर्णार्घ्यं...।

- :: जाप्य ::-

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा नम:।

जयमाला

दोहा

परमेष्ठी पद पंच हैं, सर्व जगत हितकार।
पंच परावर्तन टलें, अत: नमूँ सुखकार।।1।।

चाल - शेर

जय पंच परम इष्ट देव आपको नमन।
भव पार कीजिए मुझे सब नाशिये करम।।
शत इंद्र पूज्य देव श्री अरहंत को नमूँ।
चउ घाति हने कर्म अरिहंत को नमूँ।।2।।
अरुहंत जन्म न धरेंगे भव से मुक्त हैं।
सब दोष रहित छियालीस गुण से युक्त हैं।।

जय शुद्ध बुद्ध सिद्ध परम देव को नमूँ।
जय अष्ट कर्म मुक्त को श्रद्धा से मैं नमूँ।।3।।
संतों के संत सूरि हैं छत्तीस गुण धरें।
सत्पात्र को दीक्षादि दे उद्धार भी करें।।
जयवंत उपाध्याय अंग पूर्व ज्ञान है।
हे ज्ञानसिंधु आपको मेरा प्रणाम है।।4।।
अठ बीस मूलगुण धरे मुनिराज को वंदन।
मुनि पद कमल की धूल बने शीश का चंदन।।
मुनिराज आत्म साधना में लीन रहे हैं।
जयवंत भावी सिद्ध मुनि मौन रहे हैं।।5।।
पाँचों ही इष्ट को नवाऊँ शीश भाव से।
जिन सिद्ध पद को दीजिए अपने प्रभाव से ।।
प्रभु आपके निमित्त से पुरुषार्थ जगाऊँ।
सब कर्म बन्धनों को नाश मोक्ष को पाऊँ।। 6।।
मैं जब से पंच इष्ट की शरण में आ गया।
मैं भी बनूँ परमात्मा ये मन को भा गया।।
अज्ञान मान के वशी जो दोष हैं किए।
तुम हो दया निधे हे नाथ माफ कीजिए।।7।।
परमेष्ठी पंच हैं महान मोक्ष के आधार।
जयशील महामंत्र को प्रणाम बार-बार।।

अरिहंत सिद्ध सूरि की मैं अर्चना करूँ।
उवज्झाय साधु वंद्य हैं भवसिंधु से तरूँ।।8।।

दोहा

पंच परम पद के धनी, भविजन के आधार।
महामंत्र में निहित हैं, द्वादशांग का सार।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

घत्ता

परमेष्ठी पद की, पंच इष्ट की, जो भवि पूजा नित्य करें।
सब विघ्न नशावें, वसु गुण पावें," विद्यासागर पूर्ण " करें।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

पूज्यपाद आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज की पूजन

स्थापना

गुरुदेव नु आह्वानन करवा आविया रेलोल।
शरणे आवी ने आनंद पामिया रेलोल।।
म्हारा अंतर मन मा बसिया, गुरु आतम गुण ना रसिया।
भव-भव ना पुण्य संयोगे, गुरु विद्यासागर मलिया।।
आओ-आओ श्रद्धा थी, गुरु ने पूजिये रेलोल।
बंधन तोड़वा कर्मों ना, चालो वंदिये रेलोल।।

ॐ ह्रीं 108 आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं 108 आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं 108 आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

तमे स्वानुभूति जल भरियाँ, अमे खारा जल ना दरिया।
अने जनम-जनम ना तरस्याँ, तमे मेघ थई ने वरस्याँ।।
श्रद्धा नीर लईने चालो, गुरु ने पूजिये रेलोल।
बंधन तोड़वा कर्मों ना, चालो वंदिये रेलोल।।1।।

ॐ ह्रीं 108 आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

म्हारा गुरुवर गुण चंदन वन, जिनवर ना छे लघुनंदन।
शीतल समता नी सूरत, जिनवर ना जेवी मूरत।।
भक्ति चंदन थी, गुरुवर ने पूजिये रेलोल।
बंधन तोड़वा कर्मों ना, चालो वंदिये रेलोल।।2।।

ॐ ह्रीं 108 आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्रेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं...।

तमे अक्षय पद अभिलाषी, हूँ क्षणभंगुर जगवासी।
हवे अविनाशी सुख पामुँ, एवी आश मन मा जागी।।
अक्षत थाल भरीने, चालो पूजिये रेलोल।
बंधन तोड़वा कर्मों ना, चालो वंदिये रेलोल।।3।।

ॐ ह्रीं 108 आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

तमे कामजयी हितकारी, छो बाल ब्रह्मचारी।
शिववधू परणवा माटे, थया भेष दिगम्बर धारी।।
संयम पुष्प खिलावा, माटे पूजिये रेलोल।
बंधन तोड़वा कर्मों ना, चालो वंदिये रेलोल।।4।।

ॐ ह्रीं 108 आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्रेभ्यः कामबाणविनाशनाय पुष्पं...।